Date - 22.04.2020

Class - B.A-I
(Political science Honours)

Paper - I

Name of the Guest Teacher -
Khushbu kumari
Department of Political science
V.S.J. college, Rajnagar

Topic — लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक शर्त

लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था के गुणों के साथ ही साथ इसके कई अवगुण भी बतलाये गये हैं। लेकिन लोकतांत्रिक शासन के जो अवगुण बतलाये जाते हैं, उनमें से अनेक तो वर्तमान समय की विशेष परिस्थितियों या मानवीय प्रकृति के परिणाम हैं। वस्तुत: लोकतन्त्रीय शासन एक प्रकार से जैसी प्रजा वैसा राजा के सिद्धान्त पर आधारित होता है और इसलिए इस शासन-व्यवस्था में सुधार करने का एकमात्र व्यावहारिक मार्ग मानव व्यवहार को सुधारना है। इसके अलावा एक ऐसे वातावरण के निर्माण की आवश्यकता है, जिसके अन्तर्गत व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके। तथा इसके साथ ही अपने ज्ञान एवं बुद्धि का प्रयोग सभी के कल्याण के लिए कर सके।

लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था की सफलता के लिए मुख्य रूप से निम्नलिखित आवश्यक शर्त कही जा सकती है —

Scanned with CamScanner

(1) जनता की नैतिकता — हर्नशा ने कहा है कि लोकतंत्रात्मक सिद्धान्त का रूप अनिवार्यतः धार्मिक होता है। इसका तात्पर्य यह है कि लोकतंत्र नागरिकों की चरित्र एवं नैतिकता पर आधारित होता है। लोकतंत्र में जनता को नैतिक रूप से उच्च एवं ईमानदार होना चाहिए तथा उनमें कर्तव्य परायणता की भावना होनी चाहिए। नागरिकों को अपने मताधिकार तथा अन्य राजनीतिक अधिकारों का प्रयोग दबाव या लोभ में आकर नहीं करना चाहिए। क्योंकि अगर जनता के प्रतिनिधि भ्रष्ट हो जाते हैं तो लोकतंत्रीय शासन कभी भी सफल नहीं हो सकता। लावेल ने ठीक ही कहा है कि "जनप्रिय सरकारें उस समय तक भ्रष्टाचार से बिल्कुल मुक्त नहीं हो सकतीं जब तक कि राह चलते साधारण नागरिक का नैतिक स्तर ऊँचा नहीं होता और भ्रष्टाचारियों का सामाजिक बहिष्कार नहीं किया जाता।"

(2) शिक्षित एवं जागरूक जनता — लोकतांत्रिक शासन जनमत पर आधारित होता है अतः शिक्षित एवं जागरूक जनता लोकतंत्र की सफलता के लिए सबसे प्रमुख आवश्यकता है। जनता में इतना ज्ञान होना चाहिए कि वह देश की आवश्यकताएं समझ सके, प्रतिनिधियों का निर्वाचन कर सके और अपने अधिकार तथा कर्तव्यों का पालन उचित रूप से कर सके।

(3) नागरिक स्वतंत्रताएं — लोकतंत्र की सफलता के लिए एक आवश्यक शर्त यह है कि सभी व्यक्तियों को नागरिक स्वतंत्रताएं प्राप्त होनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

नागरिकों को विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता, संगठन बनाने की स्वतंत्रता, सम्मेलन करने की स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए तभी जनता शासक को मर्यादा एवं नियंत्रण में रख सकता है।

(4) समानता पर आधारित सामाजिक व्यवस्था — सामाजिक व्यवस्था न्याय एवं समानता पर आधारित होनी चाहिए। समाज में जन्म, जाति, रंग, धर्म, सम्प्रदाय, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए तथा प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व को समान महत्व दिया जाना चाहिए।

(5.) आर्थिक समानता — व्यवहार में राजनीतिक एवं सामाजिक समानता स्थापित करने के लिए आर्थिक समानता एक पूर्व-आवश्यकता है। कोल ने ठीक ही कहा है कि "आर्थिक समानता के अभाव में राजनीतिक स्वतंत्रता एक भ्रम मात्र है।" एक निर्धन व्यक्ति का सम्पूर्ण ध्यान अपना और अपने परिवार के भरण-पोषण तक ही सीमित हो जाता है, उसमें आत्मविश्वास नहीं होता और निर्धन वर्ग धनिक वर्ग के अनुचित प्रभाव में आ जाता है। हॉब्सन ने ठीक ही कहा है, "धनिकों का धन और निर्धनों की निर्धनता लोकतंत्र को भ्रष्ट कर देती है।" समाज में आर्थिक समानता तभी स्थापित हो सकती है, जब धन सम्बन्धी असमानता को अधिक-से-अधिक सम्भव सीमा तक दूर किया जाय तथा सभी व्यक्तियों की आर्थिक सुरक्षा की प्राप्ति ... है।

(6) सशक्त संविधान एवं लोकतांत्रिक परम्पराएं — लोकतंत्र की सफलता के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि राज्य की शासन-व्यवस्था संविधान के अनुरूप चलाया जाए। इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि प्रजातांत्रिक परम्पराओं का पालन हो। इंग्लैण्ड, अमरीका में लोकतंत्र की सफलता का श्रेय वहां की श्रेष्ठ राजनीतिक परम्पराओं को ही है।

(7) स्थानीय स्वशासन — लोकतंत्र की सफलता के लिए स्थानीय क्षेत्रों में लोकतंत्र की स्थापना की जानी चाहिए जिसे स्थानीय स्वशासन कहा जाता है। स्थानीय स्वशासन जनता में सार्वजनिक क्षेत्र के प्रति रुचि उत्पन्न करता है और सामान्य जनता के प्रतिनिधियों दोनों को ही सार्वजनिक शिक्षण प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। भारत में पंचायती राज व्यवस्था स्थानीय स्वशासन का अच्छा उदाहरण है।

(8) सुदृढ़ राजनीतिक दल — वर्तमान समय में लगभग सभी राज्यों में प्रतिनिध्यात्मक अथवा अप्रत्यक्ष लोकतंत्र ही प्रचलित है। प्रतिनिध्यात्मक लोकतंत्र राजनीतिक दलों के माध्यम से ही कार्य करता है। लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है कि राजनीतिक दल आर्थिक और राजनीतिक कार्यक्रम पर ही आधारित होने चाहिए। धर्म, जाति, भाषा या प्रांतीय भेदों के आधार पर इनका संगठन नहीं होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

इसके अतिरिक्त यह भी जरूरी है कि इन राजनीतिक दलों की संख्या एक से अधिक किन्तु बहुत अधिक नहीं होनी चाहिए और ये राजनीतिक दल प्रजातांत्रिक मूल्यों के आधार पर संगठित होने चाहिए।

(9) न्यायप्रिय बहुमत तथा सहनशील अल्पमत — लोकतंत्र में शासन परस्पर विचार-विमर्श या परामर्श द्वारा होता है और इस शासन-व्यवस्था के अन्तर्गत बहुमत द्वारा शासन किया जाता है, लेकिन बहुमत को मनमानी करने के स्थान पर हमेशा न्यायप्रियता का परिचय देना चाहिए, जिससे लोकतंत्र को बहुमत के अत्याचार की संज्ञा न दी जा सके। अल्पमत वर्ग को भी संविधान और विधियों का सम्मान करना चाहिए।

(10) बुद्धिमान एवं सतर्क नेतृत्व — प्रजातंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि नेतृत्व को बुद्धिमान एवं सतर्क होना चाहिए। नेताओं में उचित निर्णय-शक्ति, साहस, अच्छी योग्यता, एवं चारित्रिक गुणों का समावेश होना चाहिए। जनता को इन नेताओं में पूर्ण विश्वास होना चाहिए तथा उसे नायक पूजा तथा चापलूसी से अलग रहना चाहिए।

(11) योग्य और निष्पक्ष नागरिक सेवाएं — लोकतंत्र में जनता के प्रतिनिधि केवल नीति का निर्माण करते हैं और इस नीति

Scanned with CamScanner

को क्रियान्वित करने का कार्य नागरिक सेवाओं के द्वारा ही किया जाता है। यदि इन नागरिक सेवाओं के सदस्य योग्य, निष्पक्ष और कार्यकुशल हों; तो प्रशासनिक कुशलता बढ़ती है और श्रेष्ठ शासन सम्भव हो सकता है। वस्तुतः लोकतंत्र की सफलता योग्यता एवं निष्पक्षता में सक्षम नागरिक सेवाओं पर काफी हद तक निर्भर करती है।

(12) समाज में एकता की भावना — लोकतंत्रीय शासन की सफलता के लिए जनता में एकता की भावना विद्यमान होनी चाहिए, जिससे वे पारस्परिक सहयोग के आधार पर सामुदायिक जीवन व्यतीत कर सकें। जिस राज्य की जनता साम्प्रदायिक, जातिगत और प्रान्तीय भेदों को बहुत अधिक महत्व देती हो, उसमें लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता।

Scanned with CamScanner